[illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

श्रीगणेशायनमः विघ्नहरणतुम्हहोसदागणपतिहोहुसहाइ विनतीकरजोरेकरौदीजेसंपवः
नार १ जोहरीसोपरपंचजगअपनीइछ्यापाइ ताकोहौवंदनकरौहाथजोरिशिरनाइ २ करुना
भा. करिपोषकसदासकलसृष्टिकेप्रान ऐसेईश्वरकोसदारहैरैनदिनध्यान ३ मेरेमनमेअनुभवशोऐ
सोवखोकहिजाइ तातेग्रहमनआयुधोलीजेशोवकलाइ ४ रागीमनमिलिबामसोभयोनगहो
१ रोलाल प्रहअचरजउज्जलभयोतनज्योंमैलनतनकाल ५ अथचतुर्विधनायका एकनारीशोहि
तकरैसोअनुकूलवखान वहुनारीसोप्रीतिसमताकोदक्षिनजान ६ मीठेवातैसककरैकरिकै
महाविगार आवतलाजनधष्टकेकिये कोटिधिक्कार ७ अथत्रिविधिनायक स्वकियापतिशोप
तिकहेपरकीयाउपपति वैशिकनायकसोजुवहगनिकासोंहितरति ८ अथनायकाजाति
पद्मिनिचित्रिनिसंखिनीअरुहस्तिनीवखानि त्रिविधिनायकाभेदमेचारिजातिनिपजानि ९
अथनायकाभेद स्वकियाव्याही आपनीपरकीयापरवाम सोसामान्यानायकाजाधोधनथोका
म १० अथमुग्धामध्याप्रौढा विनजानेअपातहेजामेयोवनयात मुग्धाकेयभेदहैसवकविवर
नतजात ११ मध्याकोयामेदोउलज्जामदनसमान अतिप्रवीनप्रौढावहैजाकोपियमेप्रान १२
अथपरकीयाभेद ऊढाबचननमेचातुरीवहैविदग्धानीमति वहुतदुरावेहेसखीलखीलक्षितागी
ति १३ गुप्तारतिगोपनकरैलक्षनकुलटाआहि निश्चैजानेपियमिलनमुदिताकहियेताहि १४ १

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

टमितसोइ २९ मोटइतचाहिदरशकोबातनभावैमान आपेआदरकैरैधरिविबोकगुमान
३० अथदशादशा नैनमिलेअरुमनमिलोमिलनचैकोअभिलाख चिंताजामनविनमिलेजतन
बिपौह्माख ३१ सुमिरनाररससंयोगकोकरिफिरिलेतउसास करनिहरनिपियगुनकथनम
नउद्वेगउदास ३२ बिनसमुझेकछुबकिउठैकहियेनाहिप्रलाप देहघटतमनमेबढतबिरहव्याधि
संताप ३३ तिपमूरछामूरतिभई कैजडतासबगात कोकहियेउन्मादवससुधिबिननिशिदिनजा
त ३४ अथनवरस सगारहास्यसकरुणारौद्रवीर भैबिभत्सबखानियेअद्भुतसांत
सुधीर ३५ अथथाईभाव रतिहांसीअरुसोकपुनिक्रोधउछाहसुभीति निंदाघृणाविस्मैसहित
थाईभावप्रतीति ३६ विभावानुभाव जोरसकीदीपतिकरैउद्दीपनहैसोइ सोअनुभावजोउ
पजैरसकोअनुभवहोइ ३७ आलंबनआलंबिरसजामेरहैबनाइ नवहूरसमेसंचरैतेअभि
चारीभावइ ३८ अभिचारीनाम निर्वेदग्लानिशंकात्रहिविचिंतामोहविबोद दैन्यअसूयास्मृ
तिमदआलसश्रमउन्माद ३९ व्रीडाजडताहर्षधृतिमतिआवेगचपलोति आकृतिगोपनचप
लताअपसमारभयजानि ४० उत्कंठानिद्रास्वपनबोधउग्रताभाय व्याधिविषाद वितर्कस्मृ
तियेतीनिशगनाय ४१ अथअलंकार पूर्णोपमा जाकोबरननकीजियेसोउपमेयप्रमा
न जाकीसमताकीजियेसोउपमानबखान ४२ जामेसबसमतामिलैसोईउपमाजानि शशि
सेउज्जलनयनबदनपद्मनवसेमृदुपानि ४३ अथलुप्तोपमालंकार धर्मवाचकवर्णनिय
हैचौथोउपमान एकबिनदोबिनतीनिबिनलुप्तोपमाप्रमान ४४ बिजुरीसीपंककजमुखीकन

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

बिनसैंतौरसहेटकोआगेहोइनहोइ जाइसकैनसहैमैनिहिअनुशयनासोइ १५ अथवन
नायका प्रोषितपतिकाविरहिनीअतिरशापियप्रोहोय प्रनिपाक्षेपछिनाइजोधाननहंनरितासोय
१६ पातआवैकहूहैनवधिशानखंडितागेह जातमिलननअभिसारिकासजिसिंगारसबदेह १७
पियहेरेपावेचिंतामननमेंठानि शोचकरैसंतापयोउत्कंठितावखानि १८ बिनपायेधंकेतपिय
विप्रलब्धनताप थालककेसंज्यातनमजेपियआवनजिमपाप १९ जोकेपियआधीनकहिसब
धीनपतिकाताहि प्रातसुनेपियकोगमनप्रोषितपतिकाताहि २० अथमानभेद रूपप्रेमअ
भिमानतेहोयविधिगर्विताजान आनसभोगमुदुविताअनतामानतपियजान २१ धीराऽभेद
गोपकोपधीराकरैप्रकटअधीराकोप सहलाधीराधीरकेप्रकटकोपअरुगोप २२ अथमानवि
भिमान सहजैहोसारवेनजैतविनैवचनसुनिकान पोपृपरेपियकेमिटेलघुमध्यमगुरुमान २३
अथसात्विकभाव स्तंभकंपस्वरभंगपुनिविवरणआँसूस्वेद वहुरिपुलकअरुलीनताआ
ठसात्विकभेद २४ अथहाव होइसंयोगसिंगारमेदम्पतिकेतनआइ चेष्टापेबहुभांतिकीते
कहियेदशहाइ २५ पियप्यारीरतिसुखपहै लीलाहावसुजानि ललितकेनहिलाजतेविहितसह
वरवानि २६ चितवनिबोलनिचालमेरसकीरीतिविलास सोहलअंगगयंगभूषननिमेलस
नसुहावप्रकाश २७ विच्छित्रकाहूवेरमेभूषणअल्पसुहाइ रसशोभापूषणाभूलिकैपहिरैवि
भ्रमहाइ २८ कोधहर्षश्रमिलिताखभपाकिलकिंचितमेहोइ प्रकटकरैदुखसुखनमेहावकु

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

लाषोउल्लेखरवै तूरनअर्जुनतेजरविसुर गुरुवचनविशेष ५८ अथसुमिरनभ्रमसंदेह
अलंकार सुमिरनभ्रमसंदेहए तीनप्रकास सुधिआवतवाबदनकीदेखेसुधानि
धान ६० बदनसुधानिधिजानिकैतूसंगफिरैचकोर एबदनकिधौंयहसीतकरकिधौंक
मलभौभोर ६१ सुद्धापह्नुति धर्मदुरैआरोपतेसुद्धापह्नुतिजान उरपरनाहींउरो
जयहकनकलताफलमानि ६२ हेतुअपह्नुतिअलंकार वस्तुदुरावैयुक्तिसोंहेत्वपह्नुति
होइ तीव्रचंदनहींनरबिडवानलहीजोइ ६३ पर्यस्तापह्नुतिअलंकार पर्यस्तागुन
औरकौऔरविषैआरोप होइसुधाकरनाहियहवदनसुधाधरओप ६४ भ्रान्तापह्नुति
भ्रान्तापह्नुतिवचनसोंभ्रमजबपरकौजाइ तापकरैहैज्वरनहींसखीमदनतपआइ ६५
छेकापह्नुति छेकापह्नुतिऔरसोंकहिजबवचनदुराय करतअधरछतपीनहासखी
सीतरितुवाय ६६ कैतवापह्नुतिअलंकार कैतवापह्नुतिएककोमिसकरिबरनतआ
न तीक्ष्णतियकटाक्षनवराखतमनमथबान ६७ अथउत्प्रेक्षालंकार उत्प्रेक्षासंभा
वनावस्तुहेतुफललेखि नयनमनोअरविंदहैसरसबिसालबिसेषि ६८ मनोचलीआँ
गनकठिनतातेरातेपाइ तुवपदसमताकोकमलजलसेवतएकभाइ ६९ मानोथंभकोहो
कअरुनिहिंचैजैसेजान उत्प्रेक्षाइनहींसोंकहैंइनबिनगम्यबखान ७० गम्योत्प्रेक्षा कहो
कहांसबनिमधुरताअहैपरमअमृतरास नैरोहितेअलिउपाइकैकौनबिपिननिवास ७१
रूपकातिसयोक्ति सोसबीतैरूपकजहांकेवलनहिउपमान कनकलतापरचंद्रमाधरेधनु

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

कलमलातियनैनखि ॥ वनितारसश्रृंगारकीकारसमूरतिपेखि ४५ अथअनन्वय उपमेही
उपमानजबकहतअनंन्वयताहि ॥ तेरेमुखकेजोइकोतेरोईमुखआहि ४६ उपमानोपमेय
उपमालागैपरसपरसोपमाउपमेय ॥ खंजनहैतुवनयनसेतुवदृगखंजनसेय ४७ ॥ प्रतीप
नीपयथा ॥ सोप्रतीपउपमेयकोजवकीजेउपमान ॥ लोचनसेअंबुजवनेमुखसेचंदवखान
४८ ॥ उपमेकोउपमानतेआदरजबैनहोइ ॥ गर्वकरतिमुखकोकहाचंदहिनीकेजोइ ४९
अनआदरउपमेयतेजबपावैउपमान ॥ नीलनैनयनकदलतेमंदकामकेबान ५० उपमेके
उपमानजबसमतालायकनाहि ॥ अतिउत्तमदृगमीनसेकहैकवनाविधिजाहि ॥ ५१ व्यर्थहो
इउपमानजबवर्णनीयलखिसार ॥ दृगआगेमृगकछुनयेपंचप्रतीपप्रकार ५२ अथरूप
कालंकार ॥ हैरूपकद्वैभातिकोमिलितरूपअभेद ॥ अधिकन्यूनसमदुहूनकेतीनितीनपभेद
५३ मुखशशिवाशशितेअधिकउदितजोतिदिनराति ॥ सागरतेउपजीनयहकमलाअपर
सोहाति ५४ नयनकमलयेअपनहैअवरकमलकेहिकाम ॥ गमनकरतनीकीलगतकन
कलतायहवाम ५५ अतिशोभतविद्रुमअधरनहिसमुद्रसंभूत ॥ तुवमुखपंकजविमल
अतिसरससुवासनप्रसन्न ५६ परिनामालंकार ॥ करैक्रियाउपमानकेवर्णनीयपरिनाम ॥ लो
चनकंजविशालतेदेखतदेखोवाम ५७ अथउल्लेखालंकार ॥ सोउल्लेखजोएककोबहुसमु
झैबहुरीति ॥ अर्थिनसुरतरुतियमदनअरिकोकालप्रतीति ५८ बहुविधिवरनैएककोबहु

कांतिमानमुखचंद्रिकासमनोहहरीरतिमान ८८ निदर्शना कहियेत विषम दृष्टांतधाम
अर्थसमहोइ एकक्रियेपुनिवैगुनऔवस्तुमेहोइ ८९ करिपेकाजेकानजेदेवि
भा. कछुमतोइ होइ फलभाव तातासोमसुसंकविनदसोचेरूनाव ९० दृष्टाहजुपु
५ धरतपेपुजननमानपत नंजवीतनिवतुवरत्नमहादेवअंभूतमवन ९१ दुदगुहानेर
विकोजुहकजानसाभाइत दपावतलकुवधुकोधानचितवानिकोहत ९२ आनिरके
आतरेकोउपमानते उपमेअधिकोदेखि मुखहैअंबुजसोसखीमीठीवातविसेषि ९३
सहोक्ति सोसहोक्ति सवसाथहिवरनोरसमरसोइ कीरतिअरिकुलसाथहीजलनिधिप
हुचीजाइ ९४ विनोक्ति हैविनोक्तिकैभांतिकीअप्रस्तुतकछुविनहीन अरुसोभाअधि
4 कीनहैप्रस्तुतकछुपरकहीन ९५ दृगखंजननसेकंजसेअंजनविनसोहैन वलितसवगुण
सरसातनतंचरुनाईहैन ९६ समासोक्ति समासोक्तिप्रस्तुतफुरैप्रस्तुतिवरननमाइ कुमु
दनिहूंप्रफुलितभईदेखिकलानिधिसाइ ९७ परिकर हैपरिकरआसैलियेजहांविसेष
नहोइ ससिवदनीयहनायकातापहरतहैजोइ ९८ परिकरांकुर साभिप्रायविसेषजव
परिकरअंकुरनाम सुधेहोपग्रकेकहेनेकननामानतिवाम ९९ श्लेष श्लेषअर्थसेहोतअर्थ ५
षु एकशब्दमेहोत होतनापूरलनेहविनदीपकवदनउदोत १०० अप्रस्तुतिप्रसंसा
१५ अलंकारहैभांतिअप्रस्तुतिप्रसंस प्रकथरताप्रस्तुतिविनादूजेप्रस्तुतिअंस १०१ धनिय
कौ।

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

कहै वान ७२ सापन्हवातिसयोक्ति सापन्हव गुन और को औरै पद ठहराइ सुधा भरो यह वदन
मनु वचंद कहै सोराइ ७३ भेदकातिसयोक्ति अतिसयोक्ति भेदक सबै यहि विधि पर रात
जात और हसिबो देखिबो और या की बात ७४ संबंधातिसयोक्ति संबंधातिसयोक्ति जब
देत अयोग हि योग पाथर के मंदिर कहै यह ज्ञितिं लौं ऊंचे जोग ७५ अतिसयोक्ति दूजी वहै यो
ग अयोग प्रमान तु कर आगे कल्पतरु कौ पावै सनमान ७६ अक्रमातिसयोक्ति अतिस
योक्ति अक्रम जवै कारन कारज संग तु सर लागत साथ ही धनुष हि अरु अरि अंग ७७ चप
लातिसयोक्ति चपलातिसयोक्ति जो हेतु नाम ही काज कंकन ही भै मूंदरी पीय गमन सुनि
आज ७८ अत्यंतातिसयोक्ति सो अत्यंतातिसयोक्ति जह पूर्व पर ऊं मनाहि वान न पहुचे अं
ग लौं अरि पहिले गिरि जाहि ७९ अथ तुल्ययोगिता तुल्ययोगिता तीनि ये लछन क्रमते
जानि एक शब्द में हित अहित बहु में एक हि वानि ८० वह में सब गता गुननि करि या हि वि
धि भिन्न प्रकार गुननिधि नीके देत तू तिय को अरि को हार ८१ नव वनवधू की वदन दुति
अरु यह कुवलय अरविंद तू हि श्री निधि धर्म निधि तू हि इंद्र अरु चंद ८२ दीपक सोदी
९।३ पक निज गुन निगरीबनि सों दते एक भाय गज मद सों नृप तेज से सोभा लहत वनाय ८३ दी
पकावृत्ति दीपक आवृत्ति तीनि विधि आवृति पद की होइ पुनि है आवृत्ति अर्थ की दूजी
कहिये सोइ ८४ पद अरु अर्थ दुहुन की आवृति तीजी लेषि घन वरसै है री सखी निसि
हे वरसै दोषि ८५ फूले कदंव दव के फूले केतकि ... मत भये है मोर अरु चातक मन
१८ नसराहि ८६ प्रतिवस्तूपमा प्रतिवस्तूपमा जो समुझि दोउ वाक्य समान सोभा सूर
प्रताप ते सोभा सूर हि वान ८७ दृष्टांत अलंकार दृष्टांत मनमोहन ... मान

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

रणविनहीकाज विनजावककीनेहचरणअरुनेथैहैआज ११४ हेतअपूरणतें
जवैकारजपूरणहोय कुसमवानकरगहिमदनसवजगजीतेउसोय ११५ प्रति
बाधककेहोतहूंकाजपूरणमानि निशिदिनफूलसंजलितउनैनतिनकीवानि
११६ जवैअकारणवस्तुतेकाजप्रकटहोत कोकिलनकीवानीअवैवौनउन्मो त४
कपोल ११७ काहूकारणतेंजवैकारजहोइविरुद्ध करतमोहिसंतापपहसेवोधितन
मरसुद्ध ११८ पुनिकछुकारजतेंजवैउपजैकारणरूप नैनमीननतेंदाषसेसरितेंवहे ता९
अनूप ११९ विशेषोक्ति विशेषोक्तिजोहेततेकाजउपजतनाहिं नेहघटतनहियै
जेकुजामदीपमनमाहिं १२० असंभव कहतअसंभवहोतजवविनसंभावनकाज
गिरिवरधरिहैगोपसुतकोजानतयहआज १२१ असंगति तीनिअसंगतिका
ज अरुकारणन्यारेठाम औरठौरकैजिजियेऔरठौरकोकाम १२२ औरकाजआरं
भियेऔरैकरियेदौरि कोपलनमदमौतीभईवोलतअंधावौरि १२३ तेरेअरि
कीअंगनानिलककचुटाययाति मोहमिटायोनाहिप्रभुमोहलगायोआनि १२४
विषम विषमअलंकृतनीनिविधिअनमिलनेकोसंग कारणकोरंगऔरकछु ५
काजऔरैरंग १२५ औरभलोउद्यमकियेहोतवुरोफलनआइ अहिकोमलनतन

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

हरषरचोगपानकी समैसकलसुषदेत विषमौहैकैठौव आपघटयो ग्रहिहेत १०२ प्रस्तु
तांकुर प्रस्तुतअंकुरहै कियेप्रस्तुतमेंप्रस्ताव कहागयोअलिकेतकी छाडिसकोमलजाय
१०३ प्रायोक्ति परयायोक्तिप्रकारद्वै कछुरचनासोंबात मिसुकरिकारजसाधियेजोहै
चितहितसोहात १०४ चलरवहेजिनतुवगरेबिनगुनडारोमाल तुमदोउबैठेरहोजात
अन्हावनताल १०५ व्याजस्तुति व्याजस्तुतिनिन्दामिससहिजहांवडाईहोहि सरगाच
टापौपतितलैअंगगकहाकहोतोहि १०६ दुतिप्रभेदस्तुति भेदस्तुतिमैंजबैजोहनिंदान
कसतहोय भलोकरीमोकाजजैतैरहनरविनिह्वोय १०७ व्याजनिंदा व्याजसुनिंदा
केनितेनिंदाऔररहिहोय सदाछीनकीनोनतुचंदमंदहैथो १०८ सुननेसुतअव
राकसोहाइत्वलिज्ञतहैहौर सरसनेहहनेरोप्रियरवधौरसिकघिरमौर १०९ आक्षेप
तीनिभांतिआक्षेपहै एकनिषेधाभास पहिलेकहिपुनिआपुनकछुवहरिफेरिदे [illegible] तासु ॥
११० दूरेनिषेधजोविधिवचनतरुछनतीनिहिहलेषि होनहिहलोअगिनिनेति दु
ननतापविश्लेषि १११ सीतलकिरतदददरमानुअपवालिपुमुलजाहि नउदईमोज
नमदेचलेदेभानुमज्जाहि ११२ विरोधाभास भासैजबैविरोधकोहै विरोधाभास
उतरतहोउतरतहिमननेज्ञानामिवास ११३ विभावना होतछभांतिविभावनाभा

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

करतिकहाय

तेजबैनावैकारजेहोर १३९ गाथोगुरवपावतजगततासौंमारतमार निहचैजानति
भा० बातनतौपरिहार १४० गुंफा कहिएगुंफपरंपराकारणकीजबहोत मीलिहिधनत्महित्मा
६ सुनिनातेजेधउद्योत १४१ एकावली त्यहितमुक्तपदरीतिजबएकावानिसबमानि द्रग
सुनिपरस्मुतिबौंहुपरजाँघबाहुतोजानि १४२ मालादीपक दीपकएकावलिमिलेमाला
दीपकनाम कामधामतिएहिपमओतिएहिकोभूधाम १४३ सार एकएकतेसरससब
अलंकारहैसार मधुमोमधुतिहैसुधाकविताममधुरअपार १४४ यथासंख्य यथासंख्य
सबबरनिपेबस्तुक्रमकेसंग करतअरिमित्रदरिद्रकोगंजनरंजनभंग १४५ पर्याय
हैपरजायअनेककोक्रमतेआश्रमएक फिरिक्रमसोजबएककोआश्रमधरैअनेक १४६
कुलीनरत्नताचरणमेभईमंदताआइ अंबुजनजितिएबदनदुतिचंदहिरहीसमाइ १४७
परिसंख्या परिसंख्याएककथलबरजिदूजेथलरोप नेहहानिहियमेनहीभईदीपकजो न१
प १४८ बिकल्प हैबिकल्पएकैंपहैसोविधिकोजुरतंत काहेदुखकोअंतकअबप
मकैप्यारोकंत १४९ समुच्चय दोइसमुच्चयभावबहुकहुउपजैएकसंग एककाज
बाहुतकरोहैअनेकप्रसंग १५० नवअरिभाजतमिरततिभाजतहैरतराव
जीवनदियोमदनधनमदउपजावतआव १५१ कारकदीपक कारकौंदीपकएककेमै
क्रमतैभावअनेक जातचितैआवतिहंसतिपूछतिबयनविवेक १५२ समाधि सोस ६
वि

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

तीप्रकोकहाकामकोलाइ १२६ लहलना ञ्चानिसमिते उपजीकीरनिश्चेन घशिरला
वोघनसारतेश्चधिकनापलनदेत १२७ सुमानेकार श्चलंकारसमतीनिविधियपापो
गकोसंग कारजमेसवप्रादपूजार नाहिकेश्रंग १२८ श्चभावनकारजोसिद्धिजबउ
घमकरतेहोस हारवासडरपैलत्ती श्चपनेनापककोप १२९ नीचसंगश्चचरजन
हीलहीजेननाश्चाहि पघालीकेउघमाकिपेनीकेपावोलाहि १३० विचित्र इछा
फलविपरीतसोकरिपैजतननाविचित्र नवतउच्चताल हनकोजेहैपुरुषपवित्र १३१
श्चधिक श्चधिकाईश्चाधेयकीजवश्चधारतेहोइ जीश्चधारश्चाधेयतेश्चधिकश्च
धिकसैदोइ १३२ सातदीपनवखंडमेकीरतिनहीसमात सप्तसिंधुकेतीनजहां
तूणतावरतोजात १३३ श्चल्प श्चल्पश्चल्पश्चाधेयतेसूछमहोइश्चधार श्चंगुरी
कीमुंदरीनईभुजपरकरनिविकार १३४ श्चन्योन्यालंकार श्चन्योन्यालंकारवोश्च
न्योन्याउपकार शशिश्चोनिशिनिशिनीकीलसैनिशिहीश्चोशशिसार १३५ विशेषा
तीनिप्रकारविशेषहैश्चनाधारश्चाधेय पोरोकछुश्चारंभिप्रैवश्चधिकसिद्धिकोदेय
१३६ वस्तुएककोकीजिएवरनतठौरश्चनेक नभऊपरकंचनलनाकुसुमघवकहैं
एक १३७ कल्पवृक्षदेख्योसहीतोकोदेखतनेन श्चंतरबाहरदिशिविदिशिवहैनी
प्रभुखदेन १३८ व्याघात सोव्याघातजोश्चोरतेकीजेकारजश्चीर वहुरिविरोधी

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

कान १६६ गुलाब्रैगुलाजबपैकंते ग्रौरधरै उल्लास कावसंतपावनकरैगं
भा. साधरैप्रहग्रास १६७ होतग्रवज्ञाग्रौरकौलगैगनगुनाग्रर दोस परसिसधाकरकी
६ रिनिकोघुलैनपंकजकोस १६८ होतग्रनुज्ञातेबकौजबलीजे गुनमानि होइ
विपतिजामैसदाहि प्रेचदितहरिमानि १६९ गुनमैदोषग्ररदोषमैगुनकल्पना
सुलेषि सुबपहिमधुरीवानिलोबंधनलषोविसेषि १७० मुद्राप्रस्तुतिपदविषे
ग्रौरैग्रर्थप्रकास ग्रलीजाहिकिनपिवलहीजेंहारथीलीवास १७१ र लौ
७ वालप्रसिधिग्ररथकमतेग्रवरकुनाम रसिकचतुरभुजसीवदतिसकलगुननिकेधाम
१७२ तद्गुलतजगुनग्रापनोसंगतिकोगुनलेइ वेसरिमोतीग्रधरमिलि
पद्मरागछविदेइ १७३ पूर्वरूपसंगगुनतजिफिरिग्रपनोलेत दूजेगुन लै ८
जबनामिटैकिसेभिलनकेहेत १७४ सेषस्यामकैशिवगरैयथाते उज्जलहोत दीपमि
टायेहू किसोरसनामनिउद्योत १७५ ग्रतद्गुनसंगतिकेभयेजबगुनलाग
तनाहि पियग्रनरागीनाभयेवसिरागीमनमाहि १७६ ग्रनुगुनसंग
तिनैजबैपूरुगुनसरसाइ मुकुतमालहियहांसतेग्रधिककेतकेजाइ १७७ ६

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

साधिकाजसुगमअरुहेतुमत्तहोत ॥ उत्तंसोनिपकोमंशोअपयोदितउद्योत १५३ प्रत्य
नीक ॥ प्रत्यनीकजोप्रबलरिपुताधोकहिकौंजोर ॥ नैनसमीपीअबलनपरचलोकमलकरिदौर
१५४ काव्यर्थापत्ति ॥ काव्यर्थापत्तिकोसधैयहिविधिवरनतजात ॥ मुखजीत्योवाचंदशो
कहाकमलकीबात १५५ काव्यलिंग ॥ काव्यलिंगजुगजुक्तिसोअर्थसमर्थनहोय ॥ जोतोको
जीत्योमदनमोहियमेशिवसोय १५६ अर्थांतरन्यास ॥ सामान्येविशेषदृढसोअर्थांत
रन्यास ॥ रघुवरकेकरसिंधुतरेवडेकरैनकहास १५७ विकस्वर ॥ विकस्वरहोयुविशे
षजबफिरसामान्यविशेष ॥ हरिगिरिधारेगसतउदधिभारसहैज्योशेष १५८ प्रौढोक्ति
प्रौढउक्तिपरलाविषअधिकाईअधिकार ॥ केशअमावसरैनघनसघनतिमिरकेता
र १५९ संभावना ॥ योंपौहोतौतौकहैसंभावनाविचार ॥ वक्ताहोतोशेषतौलहतौलेगु
नपार १६० मिथ्याधिवसित ॥ मिथ्याधिवासतकहतहैअलंकारयहिरीति ॥ करमेपार
दजोगहैकरैनवोढप्रीति १६१ ललित ॥ ललितकह्योकछुचाहियेताहीकोप्रतिविंब ॥
सेतवांधिकरिहौकहाअवतौउतरेअंव १६२ प्रहर्षण ॥ तीनप्रहर्षणजतनविनवां
छितफलजोहोय ॥ वांछितहतेअधिकजवश्रमविनलहियेसोय १६३ सोधतजाकोज
तनकोवस्तुचढैकरसोय ॥ जाकेचितचाहतहतोआईदूतीसोय १६४ दीपककोउद्य
मकियोतवलखमिटदयोभान ॥ सिपिअंजनकेसोधकोजतनलह्योनिदान १६५ विषाद
सोविषादजवचाहतेउलटोकछुहैजान ॥ नीवीपरसतकुनि•प[illegible]रीचरणायुधपुनि

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

कछुपलिशोछेकउक्तिशोमानि जोभाइनकोकेरिहे ताहिपनंजपजानि १८१ वक्रोक्ति वक्र
उक्तिश्लेषतेअर्थफेरजवहोइ रसिकअपूरवहेपियाबुरोजहतनमहीकोइ १८२ स्वभावोक्ति स्वभा
भा० वोक्तिसहजातिधिवरनतजातिसुभाइ हसिहेसिरनिमुकिमुकिमिसाहमुहमोरतिइतराइ १८३
८ भावी भावीभूतभविष्यजोपरतछिपिहोइ वृंदावनमेआजुवहलीलादेषीजाइ १८४
८ उदात्त उपलछनदेसोधियेअधिकारेशोदात्त तमजाकेवसहोतहेमुनेननकरीवात १८५
अत्युक्ति अलंकारअतिसुक्तिजहवरननअतिसेरूप जाचकतेरेदानतेभएकल्पतरुभूप १८६
प्रतिषेध सोप्रतिषेधप्रवंध जोअर्थनिषेध्योजाइ मोहनकरमुरलीनहीहेकछुहेकछुहीवला
इ १८७ विधि अलंकारविधिसिद्धिजोअर्थसाधियेफेर कोकिलहेकोकिलजवेअतुभेक
रिहेटेर १८८ हेतु हेतुअलंकतहोतजहकारनकारजसंग कारणकारजहेजवेवस्तुएक
हीअंग १८९ उदितभयोशशिमानिनीमानमिटावनमानि मेरीरिद्धिसमृद्धिफलतेरीकृपा
वषानि २०० अर्थालंकारइति अथछेकानुप्रास हेछेकानुप्रासरससमितविनहीहोइ
अद्दतिवरनअनेककोफेरइजवहोइ २०१ अंजनलालोहेअधरप्यारेनेननवीक मुकतमा
लउपटीपुरुषकेहिनहिसेपरटीक २०२ लाटानुप्रास शोलाटानुप्रास जवपदकीआवृत्तिहोइ ८
पारअर्थकीभावशोभेदविनाहीशोइ २०३ पीयनिकटजाकेनहीघामचांदनीताहि पीयनि १३
कटजाकेसेवोघामचांदनीनौ २०४ यमक यमकशब्दकोफिरश्रवणअर्थदुसरोजानि ८
ह

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

मीलितशोशादृश्यतेभेदजवैनलषाए अद्लावरलालितिपचरणपरजावककलपोलजाइ
१७८ सामान्यजोसदृश्यतेजानिपरैनविशेष नहीफरकश्रुतिकमरलग्र
रुनिपलोचुनअनिमेष १७९ उन्मीलितसशादृश्यतेभेदफुरैलवमानि
कीरतिआगानुह्निनपार छब्योपरलजानि १८० एहैविशेषविशेषपुनिकै
रैजोसमतामांम तिपमुखअरुपंकजलेषभाशिदरशाननेसांम १८१ गू
ढोत्तरकछुभावलेउत्तरदीनेहोत उत्तवैरनतद्रमेपथिकउतरलालापककोल १८२
चित्रप्रस्नउत्तरदोउएकवचनमेहोइ कुग्धातिपकीकेतिपेमोनकौनमेहोइ १८३
सूछमपरआसैलषैसैननिमेकछुभाए शालहिआपेसजपियहेसिरावीलिपपाए १८४
पिहितछपीवरवानकोआनिदिवावैभाए मेदेष्योउनशीशमनिकेशलिलिओ
छपाए १८५ व्याजउक्तिकछुऔरविधिकहेदुरैआकार संखिगकी
नेनसैमानिजानिअनार १८६ गूढोक्ति गूढउक्तिमिसऔरकेकीजेपरउपदेश
कालिसंखीहोजाउगीपूजनदेवमहेश १८७ विवृतोक्ति श्लेषछप्योपरगटकिये
विवृतोक्तिहेएन पूजनदेवमहेशकोकहेदिषावैनेन १८८ युक्ति इहेयुक्तिकीनेकपा
धर्मछपालोजाए पीवचलैआभूवलेपोछतीनेनजलाए १८९ लोकोक्ति लोकोकति
जोकछुवचनलोनेलोकप्रवाद नैननमूंदिषटमासलोसहियेविरहविषाद १९० लोकउक्ति

नं २

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

शीतल चंदन चंद लहि अधिक अगिनि ते मानि २०५ छेकानुप्रास बरनन या मे है सबै उप
नागरिका जानि दूजे परसा कहत है या भेद कुतल मास बिन समास बिन मधुरता कहि कोम
लाभास २०५ अति कारी भारी घटा प्यारी वारी वैस पिय परदेश अदेश यह आवत ना
भा० ९ हि संदेश २०६ कोकिल चातक भृंग कुल केकी कानन चकोर सोर सुने घर को हियो
काम कटक अति जोर २०७ घन बरसत दामिनि लसत दशदिशि नीर तरंग दंपति
हिये हुलास सो अति सरसात अनंग २०८ अलंकार सब अर्थ के कहे एक से आठ
करे प्रगट भाषा विषे देषि संसकृत पाठ २०९ शब्द अलंकृत बहु हुते अछर के संजोग
अनुप्रास भाषा षट विधि कहे जे है भाषा जोग २१० ताहि नर के हेत यह कीन्हों ग्रंथ नवीन
जे पंडित भाषा निपुन कविता विषे प्रवीन २११ तिन्ह अवनति पर अरु उरप के हाव भाव रस
धाम अलंकार संयोग ते भाषाभूषण नाम २१२ भाषाभूषण ग्रंथ को जो देखे चित ला
य विविध अर्थ रस सहित सो समुझै सबै बनाय २१३ इति श्री भाषाभूषण समाप्त ९
म् माघ मासे सित पक्षे चतुर्थ्यां भृगुवासरे सायंकाले मघायां नु संपूर्णेदं मया कृतम्

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

[illegible] ८

10

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham